Edit with WPS Office

कक्षा - 2

विषय - हिन्दी

पाठ - 3 सीख

विधा - कहानी

शब्दार्थ कॉपी कार्य

धैर्य - धीरज

प्रयास - कोशिश या उपाय

साधना - समर अर्थात् तपस्या रूपी युद्ध

जवाब - उत्तर

खाली - रिक्त

निराहार - बिना भोजन के

संबल - सहारा

दृष्टि - निगाह

रेत- बालू

सारा - संपूर्ण

पुनः - दोबारा

रत - लीन

निरंतर - लगातार

पाठ का व्याख्यान

पाठ के शीषर्क का अर्थ सीख अर्थात् शिक्षा हैं जो कहानी हम आज पढ़ेगे उस कहानी मे महात्मा बुद्ध को एक छोटी सी गिलहरी से तपस्या का ज्ञान मिला अब हम पहले महात्मा बुद्ध के जीवन के बारे मे कुछ जानकारी लेगे

बचपन में उनको राजकुमार सिद्धार्थ के नाम से जाना जाता था।इनका जन्म लुम्बिनी (आज का आधुनिक नेपाल) में पैदा हुए और उनका जन्म का नाम सिद्धार्थ गौतम था और वह एक राजकुमार के रूप में पैदा हुए थे. उनके पिता शुद्धोधन शाक्य राज्य के राजा थे और उनकी मां रानी माया थी और उनके जन्म के बाद शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो गई थी.

इनका विवाह राजकुमारी यशोधरा से हुआ | इनका एक पुत्र था जिसका नाम राहुल था एक बार वह अपने राज्य मे कपिलवस्तु की गलियों में उनकी दृष्टि चार दृश्यों पर पड़ी ये दृश्य थे एक वृद्ध विकलांग व्यक्ति, एक रोगी, एक पार्थिव शरीर, और एक साधु। इन चार दृश्यों को देखकर सिद्धार्थ समझ गए थे कि सब का जन्म होता है, सब को बुढ़ापा आता है, सब को बीमारीहोती

Edit with WPS Office

है, और एक दिन, सब मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इससे व्यथित होकर उन्होंने अपना धनवान जीवन, अपनी पत्नी-पुत्र एवं राजपाठ का त्याग करते हुए साधु का जीवन अपना लिया और जन्म, बुढ़ापा, दर्द, बीमारी, और मृत्यु से जुड़े सवालों की खोज में निकल गए। वे अनेक कष्टों को सहते हुए भोजन की मात्रा घटाते - घटाते पूर्णतया बिना भोजन के रहने लगे थे |उन्होंने वस्त्र भी त्याग दिए थे किंतु सफ़लता न मिलने के कारण जिस धैर्य का सहारा लेकर वे साधना समर मे उतरे थे वह जवाब देने लगा था और बुद्ध घर वापस लौटने लगे थे |रास्ते मे एक ठंडे पानी की झील पड़ी तो वे थोड़ा विश्राम करने के लिए झील के किनारे बैठ गए |तभी उनकी द्रष्टि एक गिलहरी पर पड़ी जो बार - बार झील के पानी में डुबकी लगाती और बाहर आकर रेत मे लौटती पुनः झील में डुबकी लगाने दौड़ पड़ती |यह देखकर बुद्ध बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने उससे पूछा " नन्ही गिलहरी तुम यह क्या कर रही हो? " गिलहरी बोली " इस झील ने मेरे बच्चों को खा लिया है इसलिए मैं इसे खाली कर दूँगी |" बुद्ध यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होंने उससे फिर पूछा, " परन्तु तुम्हारे इस काम से क्या यह संभव है? " "यह तो मैं नहीं जानती परंतु जब तक यह झील सूख नहीं जाएगी, मैं प्रयास करती रहूँगी |" गिलहरी ने कहा |बुद्ध को बहुत आश्चर्य हुआ वे बोले कि "इस जन्म में तो मुझे यह संभव नहीं लगता है |" बुद्ध की बात सुनकर गिलहरी ने कहा "भले ही यह संभव न हो और मेरा सारा जीवन इसमें लग जाए, पर इतना तो निश्चित है कि इस प्रकार थोड़ा - थोड़ा पानी निकालकर मैं अपने उद्देश्य की ओर बढ़ती रहूँगी |" बुद्ध को गिलहरी की बात समझ में आ गई और वे पुनः तपस्या मे लीन हो गए |

हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि" हमें डर या घबराकर किसी भी काम को छोड़ना नहीं चाहिए क्योंकि बार - बार कोशिश करने पर सफ़लता अवश्य मिलती है |"

सोचो और बताओ कॉपी कार्य

(क) बुद्ध के बचपन का क्या नाम था?

(उ.) बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था |

(ख) बुद्ध के पिता का क्या नाम था?

(उ.) बुद्ध के पिता का नाम शुद्धोधन था |

(ग) बुद्ध की माता का क्या नाम था?

(उ.) बुद्ध की माता का नाम माया देवी था |

(घ) बुद्ध घर वापस क्यों लौटने लगे?

(उ.) बुद्ध अपना घर - बार छोडकर तपस्या करने के उद्देश्य से घर से निकले थे किंतु तपस्या मे सफलता नहीं मिली तब वे घर लौटने लगे |

(च) वे विश्राम के लिए कहां बैठ गए?

(उ.) वे विश्राम के लिए झील के किनारे बैठ गए |

(छ) बुद्ध ने गिलहरी से क्या सीख ली?

(उ.) बुद्ध ने गिलहरी से सीख ली कि हमे घबराकर किसी भी काम को बीच में नहीं छोड़ देना चाहिए क्योंकि लगातार प्रयास करते रहने से सफ़लता अवश्य मिलती है

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो कॉपी

Edit with WPS Office

(क) बुद्ध घर - बार छोडकर क्यों निकल गए?

(उ.) तपस्या करने के उद्देश्य से बुद्ध घर - बार छोड़कर निकल गए थे |

(ख) गिलहरी क्या कर रही थी?

(उ.) गिलहरी बार - बार झील के पानी में डुबकी लगाती थी और बाहर आकर रेत मे लोट जाती थी |फिर डुबकी लगाने दौड़ पड़ती और वापस आकर रेत मे लोट जाती थी |

(ग) वह झील को क्यो खाली करना चाहती थी?

(उ.) वह झील को खाली करना इसलिए चाहती थी क्योंकि झील ने उसके बच्चों को खा लिया था |

(घ) इस कहानी से हमे क्या शिक्षा मिलती है

(उ.) इस कहानी से हमे शिक्षा मिलती है कि काम कितना ही कठिन क्यों न हो, हमे हिम्मत नहीं हारनी चाहिए लगातार प्रयास करते रहने पर सफलता अवश्य मिलती है |